प्रश्न :-
⟹ शिक्षा में मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? मूल्यांकन तथा मापन में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा मूल्यांकन के सिद्धान्त बताइए।

उत्तर :- मूल्यांकन का अर्थ -

शिक्षा में मूल्यांकन का प्रयोग वर्तमान शताब्दी की घटना है। ग्रीन व अन्य का कथन है, "शिक्षा में मूल्यांकन अभी एक नवीन धारणा है। इसका प्रयोग विद्यालय कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, शिक्षक एवं बालकों की जाँच के लिए किया जाता है।" इसके द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों, सीखने, अनुभवों तथा परीक्षणों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

शिक्षा आयोग 1964-66 ने अपने प्रतिवेदन में मूल्यांकन की धारणा को इन शब्दों में परिभाषित किया है, "मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षण प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन आदतों तथा शिक्षक की शिक्षा पद्धति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन की प्रविधियाँ वाँछित दिशाओं में छात्र के विकास के विषय में प्रमाण संग्रहित करने के साधन हैं।" मूल्यांकन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएं नीचे दी जा रही हैं —

1. क्विलिन व हन्ना के मतानुसार, "छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाये गये परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"

2. माइकेलिस के मतानुसार, "मूल्यांकन उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रक्रिया है। इसमें निर्देश-परिणामों को जाँचने के लिए शिक्षक, बालकों, प्रधानाचार्य तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली सब प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं।"

उपर्युक्त विवेचना एवं परिभाषाओं को देखने से मूल्यांकन की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. मूल्यांकन एक प्रक्रिया है, जो निरन्तर चलती रहती है।
2. मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।
3. मूल्यांकन के छात्रों के व्यवहार के विषय में सामग्री एकत्रित करने के समस्त साधन सम्मिलित रहते हैं।
4. मूल्यांकन केवल निर्देश की उपलब्धि को ही नहीं मापता है, वरन उसको उन्नत भी बनाता है।

⟹ मूल्यांकन तथा मापन में अन्तर

1. मूल्यांकन मापन की ~~अप्र~~ अपेक्षा एक व्यापक पद है।
2. मूल्यांकन में मापन निहित है। मापन मूल्यांकन का समानार्थी नहीं है।
3. मापन में छात्रों का संख्यात्मक वर्णन किया जाता है ~~जो है~~ मापन मूल्यांकन का वह भाग है, जो प्रतिशत, मात्रा, अंकों मध्यमान तथा औसत आदि द्वारा व्यक्त किया जाता है।
4. मापन यह ज्ञात करने से सम्बन्धित है 'कितनी मात्रा में है?' इसके विपरीत मूल्यांकन का सम्बन्ध है 'कितना अच्छा है?'
5. मापन एकांगी है, जबकि मूल्यांकन बहुमुखी होता है।
6. मापन मूल्यांकन प्रक्रिया का एक साधन है।
7. मापन- स्थिति का संकेत देता है जबकि मूल्यांकन उसकी स्थिति, महत्व या मूल्य का निर्णय करता है।

⟹ मूल्यांकन के सिद्धान्त

मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों पर ध्यान आवश्यक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. शिक्षक स्पष्ट रूप से पद निर्धारित करे कि मूल्यांकन किन-किन तत्वों को समाहित करना है साथ ही वह उनको प्राथमिकता के आधार पर व्यवस्थित करे।
2. छात्र व्यवहार के किसी विशिष्ट पक्ष के मूल्यांकन के लिए उपयुक्त प्रविधि का चयन करे।
3. शिक्षक मूल्यांकन प्रविधियों के समुचित प्रयोग के लिए विषय में उपयुक्त जानकारी रखे।
4. शिक्षक मूल्यांकन को साध्य न मानकर साधन समझे।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner